भगवान काल

इस पृथिवी के सर्वप्रधान भगवान हैं ''काल''। धर्म, काम, काल, वसु, वासुकि, अनन्त व कपिल, ये सात महात्मा पृथ्वी के धारक हैं। ये ही ''दिक्पाल'' नाम से कीर्तित होते है। काल श्रीकृष्ण के दक्षिण नेत्र से सम्भूत भैरव विशेष हैं। श्रीकृष्ण के दक्षिण नेत्र से त्रिशूल, पट्टिश प्रभृति नाना अस्त्रधारी त्रिनेत्र अर्द्धचन्द्र शोभित मस्तक भीषणाकृति काल इत्यादि भैरवगण ने जन्मग्रहण किया। संध्या, रात्रि, दिन – ये तीनों काल की स्त्रियाँ कहकर उद्धृत हैं। इन काल-भैरव ने ब्रह्मा के अन्यतम पुत्र मनु, तत्पुत्र प्रजापति, इनके पुत्र ध्रुव एवं ध्रुव के पुत्र संहारकर्ता भैरवराज ''काल'' के रूप में जन्मग्रहण किया था।

श्रीरामचन्द्र

लंकासमर में विजयी होकर अयोध्या में प्रत्यावर्तन कर राजपद पर अभिषिक्त होने के पश्चात् श्रीरामचन्द्र के बहुकाल धर्मानुसार राज्य करने के बाद एकदिन कालदेव ने एक ब्राह्मण तापस का वेश धारण कर अयोध्या में आकर श्रीराम से साक्षात् करने के लिए राजगृह में आगमन किया। लक्ष्मण कालदेव को नहीं पहचान सके एवं उसको एक तपस्वी समझते हुए श्रीराम के निकट ले गये। वहाँ जाकर तापस वेशी कालदेव ने श्रीराम को कहा कि जब वे प्रभु के साथ निर्जन में बात करेंगे तब कोई और वहाँ उपस्थित न रहे। इसीलिए कालदेव ने श्रीराम से यह प्रतिज्ञा करवायी कि उनदोनों के एकांतालाप के समय में यदि कोई व्यक्ति उनदोनों का वार्तालाप श्रवण करे या उनसबों का दर्शन करे तो वह व्यक्ति श्रीराम का वध्य होगा। उस संकल्प के अनुसार श्रीराम प्रतिज्ञाबद्ध होकर अपने विश्वस्त भ्राता लक्ष्मण को द्वारपाल रखकर कालपुरुष के साथ कथोपकथन करने में नियुक्त हुए। अतः कालपुरुष ने श्रीराम के निकट स्वमूर्ति धारण करते हुए स्वयं का परिचय प्रदान किया। कालदेव ने कहा – ''हे पुरुषोत्तम राम आप साक्षात् विष्णु का रूप हैं। ब्रह्मा के निर्देशानुसार मैं आप के निकट आया हूँ। आप ने पूर्वजन्म में माया के गर्भ से मेरी उत्पत्ति की थी। पूर्वकाल में जब आप माया के द्वारा सर्वप्राणियों को विनष्ट कर महार्णवगर्भ में शयन कर रहे थे उसी समय मेरा जन्म हुआ था। आपने अपने दिव्य नाभिकमल मध्य से मेरी सृष्टि करके प्रजासृष्टि कार्य में नियुक्त किया था। मैंने यह भार ग्रहणकर प्रजा का सृजन किया था परन्तु प्रजापालन करने में असमर्थ होने के कारण तब आपसे ही उसका भार ग्रहण करने के लिए अनुरोध किया था। आप मेरे अनुरोध पर विष्णुरूप परिग्रह कर प्रजापालन में तत्पर हुए थे। हे धरणीधर, वर्तमान में आपने रावणवध करने के लिए मर्त्यधाम में आगमन किया हैं। आप को मर्त्यलोक में निवास करने के लिए पूर्वकाल में देवगण ने एकादश सहस्रवर्ष काल निश्चित किया था। आप के मानव शरीर के परमायु पूर्ण होने के साथ-साथ आप का मनोरथ भी (रावणादिवध) पूर्ण हो गया है। यदि आपकी और अधिक काल तक राजत्व करने की इच्छा है तो वही करिए। आप का कल्याण हो। परन्तु यदि आप की देवलोक में जाने की इच्छा हैं तो आप के आगमन से देवगण सनाथ एवं निश्चिन्त होंगे।'' – इस प्रकार से भगवान श्रीराम का वास्तविक परिचय प्रदान कर कालदेव अदृश्य हो गए। ये कालपुरुष ही हुए कालभैरव। इन्होंने श्रीराम को स्वलोक में वापस जाने के लिए अनुरोध किया। कालदेव के अनुरोध पर श्रीराम ने पुनराय विष्णुलोक तथा वैकुंठ में प्रत्यावर्तन करने के लिए मनस्थ किया था।

(सहायक ग्रंथों :–ब्रह्मवैवर्त पुराण व अध्यात्म रामायण)

–हिन्दी अनुवाद–मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख

मन की शक्ति हुई वास्तविक शक्ति। उपयुक्त मानसिक बल का अधिकारी होने पर अग्नि भी शीतल प्रतीत होती है।

–श्रीश्रीबाबा